Yashoda Girls' Arts & Commerce College, Nagpur

Department of Pali

Assignment

Session: 2020-2021

Subject: Pali Compulsory

INDEX

NAME: Siyavati m. patel STD.: B.A SEC. 6th ROLL NO.:

S. No.	Date	Title	Page No.	Teacher's Sign / Remarks
1		धम्मचक्कपवत्तनसुत्त संदर्भ स्पष्टीकरण सार	1,3	
2.		वेस्सन्तरचर्या	4,7	
3]		व्याकरण	8,11	
		सत्र 2020-2021		

Lecturer: Rashmi L. Narnaware

PRINCIPAL
Yashoda Girls Arts & Commerce College
Sachh Nagar, Nagpur-18

SEAL

RNarnaware

1) धम्मचक्कप्पवत्तनसुत्त स्पष्ट कीजिए।

संदर्भ :-

धम्मचक्कपवत्तन सुत्त यह हमारे पाली साहित्य के त्रिपिटक के महावग्ग से लिया गया है। यह पर भगवान बुद्ध के द्वारा दिये गए प्रथम उपदेश का वर्णन है। यह पर प्रथम पाँच भिक्षुओं को चार आर्यसत्य तथा आर्य अष्टांगिक मार्ग का उपदेश है।

स्पष्टीकरण :-

धम्मचक्क पवत्तन सुत्त में भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त करने के पश्चात् जो पहला प्रवचन दिया उसमें चार आर्य सत्यों का वर्णन है, जिसका उन्हें ज्ञान हुआ। धम्मचक्क पवर्तन सुत्त में चार आर्य सत्यों का विवरण है। यह एक ही सुत्त है जिसमें सब कुछ है। धर्म और ज्ञान को समझने के लिये।

कहते हैं जो बोधिवृक्ष के नीचे बुद्धत्व प्राप्त करने के पश्चात् भगवान बुद्ध ने सोचा जो ज्ञात मैंने पाया है, जिस दिव्य घटना का मैंने अनुभव बुद्ध ने सोचा जो ज्ञान मैंने पाया है, जिस वह इतना

सूक्ष्म है कि शब्दों में उसका बयान नहीं किया जा सकता; सिखाया नहीं जा सकता। अतः मैं खामोश रहूँगा। चुप रहूँगा। मैंने पाया है वह स्वअनुभव से ही समझा जा सकता है और पाया जा सकता है। अतः शेष जीवन में किसी से कुछ नहीं कहूँगा और बोधि वृक्ष के नीचे ही बैठा रहूँगा। अकेला ही विचरण करूँगा। भगवान बुद्ध बोधि वृक्ष के निचे बैठे ऐसा सोच ही रहे थे। कि ब्रह्मा भगवान बुद्ध के पास आए और उनसे याचना की और मनाया कि वह लोगों में अपना ज्ञान बांटे और विश्वास दिलाया कि समाज में ऐसे लोग हैं जो उनकी शिक्षा को समझ सकेंगे जिनकी आंखों में थोड़ी सी धूल जमा है।

भगवान बुद्ध इस प्रकार ब्रह्मा से प्रेरणा पा बोध गया से, वाराणसी के लिये चल पड़े। मार्ग में उन्हें एक तपस्वी साधु मिला। वह भगवान बुद्ध के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ, और पूछा कि ए तपस्वी! ऐसा क्या तुमने पाया है। जो तुम्हारे तेजस्वी शरीर से प्रकाश की किरणें फूट रही हैं। भगवान

बुद्ध ने उत्तर दिया मुझे बुद्धत्व की प्राप्त हुई है। मैं अर्हत हूं। मैं बुद्ध हूं। उस साधु ने सोचा कि। कठिन चर्या के प्रभाव से यह अपने को बहुत बड़ा समझने लगा है, अपने को बुद्ध समझने लगा है।

सार :-

चार आर्यसत्य और मध्यम मार्ग (अष्टांगिक) मार्ग यही भगवान बुद्ध की संपूर्ण शिक्षा का सार है।

2) वेस्सन्तरचर्या :- का सार स्पष्ट कीजिए

संदर्भ :-

~~वेसन्तर~~ वेस्सन्तरचर्या चर्या यद्यपि यहाँ पर वेस्सन्तरचर्या बोधिसत्व के चर्या के बारे में बताया है। वेस्सन्तरचर्या द्वारा दिए गए महादान का वर्णन किया गया है। इतना दान किया है कि उसके तेज से यह पृथ्वी जब जब दान किया तब कंपित हुए (सात बार)

अर्थ :-

इस (आगे वर्णित) जन्म में जो क्षत्रिय कुलोत्पन्न स्पृशाली (फुस्सती) नामक स्त्री मेरी माता हुई वह किसी पूर्वजन्म में देवराज शक्र की महारानी थी ६७॥

उसकी आयु के क्षय का ज्ञान होने पर देवेन्द्र ने उससे यह कहा - 'मैं तुमको देख कर (इच्छापूर्ति का आश्वासन) देना चाहता हूँ, जो इच्छा हो, वे वर माँग लो" ॥ ६८ ॥

(शक्र द्वारा) ऐसा कहने पर वह देवी शक्र से यह बोली — " मैंने आपका क्या अपराध किया है ? या किसी कारण आपको मुझसे कोई द्वेष हो गया है कि आप मुझको इस रम्य

मैं प्रत्येक पक्ष को अमावास्या, पूर्णिमा उपोसथ के दिन प्रत्यय नामक हाथी पर आरूढ़ होकर दान देने के लिए जाता था।।

क्योंकि उनके देश में उस वर्ष अकाल के कारण भुखमरी फैल गयी थी उनके मांगने पर मैंने अपने वह श्रेष्ठ हस्ती, जो कि हजारों में एक था, उनको दे दिया।।

ब्राह्मणों को वह दान करते समय मेरे चित्त में न कोई क्षोभ (व्यग्रता) हुआ, और न कोई चञ्चलता ही। मैंने इसको न देने के लिये कोई छल (बहाना) भी नहीं किया; क्योंकि दान करना स्वयं मुझको बहुत प्रिय था।।

ब्राह्मणों को वह दान करते समय मेरे चित्त मे न कोई छल भी नहीं किया; क्योंकि दान करना स्वयं मुझको बहुत प्रिय था।।

एक हाथ में उस गज की सूंड पकड़कर तथा दूसरे हाथ में रत्नालंकृत सुवर्णपात्र से जल लेकर मैंने उस गज के दान का संकल्प कर दिया।।

मेरे द्वारा इस सर्वश्रेष्ठ का दान किये जाते हैं।

स्थान से उसी प्रकार हटाना चाह रहे है, जैसे कोई तीव्र वात्याचक्र किसी वृक्ष को मूल से उत्पन्न कर देता है।॥६९॥

उसके द्वारा द्वारा यह कहे जाने पर शक्र ने उत्तर दिया। "तुमने कोई पाप नही किया है, न तुमसे मेरा कोई कोई द्वेष ही है।॥७०॥

परन्तु तुम्हारी आयु (स्वर्ग में रहने का समय) इतनी ही थी। अब यहाँ से च्युत होने का तुम्हारा समय आ गया है। अतः तुम मेरे द्वारा दिये गये दश वर स्वीकार कर लो ॥७१॥

इस प्रकार, वह शक्र से दश वर प्राप्त कर, और उन दश वरों में मेरा उसका पूर्ण होना जानकर, बहुत ही प्रसन्न हुई ॥७२॥

जब मैं अपनी उस प्रिय माता फुस्सती की कोख मे आया तब मेरे इस आगमन के प्रभाव से वह सदा दान करने लगी॥

वह उस समय, निर्धन, रोगी, वृद्ध, भिखारी, यात्रीजन, श्रमण, ब्राह्मण, दुर्बल एवं सज्जन लोगों को दान देती थी॥

उसने मुझको दश मास तक अपने गर्भ मे धारण कर, नगर की प्रदक्षिणा करते हुए (वाणी) की

गला में जाकर मुझको पैदा किया ॥ जब मेरी आयु आठ वर्ष की हुई मैंने अपने प्रासाद में बैठकर सर्वविध दान देने का प्रयत्न किया ॥ मेरे द्वारा यह दृढ़ एवं स्थिर सङ्कल्प किये जाते समय सुमेरू वन, पुष्प फल वृक्षों यह समस्त पृथ्वी काँप उठी ॥

सार :—

दान पारमिता में वेसन्तर बोधि सत्व जैसे कोई नही हुआ उन्होंने वाले को कभी खाली हाथ नही भेजा जिसने जो माँग वे पाँच उन्होंने ज्ञान प्राप्ति के लिए इतना महादान दिया हमें भी उससे प्रेरणा लेकर दान करना चाहिए ।

SEAL

① व्याकरण

समास

दो या दो से अधिक शब्दों को मिला कर छोटा करने के लिए जो एक सम्मिलित शब्द-समूह, विभक्तियों को लोप करके बनाया जाता है।
(1) अव्ययीभाव, (2) तत्पुरुष, (3) कर्मधारय, (4) बहुव्रीहि, (5) द्विगु और (6) द्वन्द्व।

1. अव्ययीभाव

जब किसी अव्यय के साथ शब्द का समास होता है तो उसे अव्ययी-भाव समास कहते है।

समास	भाव
सब्रह्म	ब्रह्मा के साथ
उपनगर	नगर के पास
सतिण	घास के साथ

SEAL

② तत्पुरुष

जिन समासों में पहला विभक्ति (=कर्ता कारक) को छोड़कर अन्य विभक्तियों में चिन्हों का लोप हो जाता है. उनके तत्पुरुष समास होता है।

तत्पुरुष समास के कुछ उदाहरण

समास	विग्रह	अर्थ
तम्मुखं	तस्स मुखं	उसका मुख
उदकसोतं	उदकस्स सोतो	पानी का स्रोत

③ कर्मधारय

विशेषण और विशेष शब्दों का जो समास होता है, उसे कहा कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे :—

कर्मधारय समास के कुछ विशेष उदाहरण :—

सामान्ना ज्योति = सज्योति = प्रकाश के समान
तिन्नं लोकानं समाहारो = तिलोकं = तीन लोक
चतुन्नं सच्चानं समाहारो = चतुसच्चं = चार सत्य

SEAL

(4) बहुव्रीहि

जिस समास के शब्द विशेषण बनकर किसी तीसरे, अन्य शब्द का संकेत प्रकट करते हैं, वे बहुव्रीहि समास होते हैं।

बहुव्रीहि समास के कुछ विशेष उदाहरण :-

सपुत्तो = सह पुत्तेन वत्तमानो सो
मनोसेट्ठा = मनो सेट्ठा एतेसं इति

(5) क्रियार्थ

जब दो क्रियाओं के कुछ प्रत्ययान्त शब्दों के साथ समास होता है तो उसे क्रियार्थ समास कहते हैं।
जैसे - मलीनाकरिय = मैला करके

क्रियार्थ समास	अर्थ
सक्कच्च	सत्कार करके
मनासिकरिय	मन में करके
पुरोभूय	आगे होकर

(६) द्वन्द्व

दो या कई शब्दो के बीच 'च' (= और) का लोप करके जो समास बनाया जाता है, उसे द्वन्द्व समास कहते है।

इतरेतर :- जब समास में आई हुई दोनों संज्ञाएँ अपना प्रधानत्व और व्यक्तित्व रखती है, तब उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते है,

माता च पिता च = मातापितरौ
पिता च पुत्रो च = पितापुत्रौ

समाहार =

जब समास में ऐसी संज्ञाएँ आवे, जो 'च' से जुड़ी हुई होने पर अपना अर्थ बतलावे और साथ ही साथ, एक समाहार (=समूह) का भी बोध, करावे तो उन्हें समाहार द्वन्द्व कहते है। यह समास नपुंसक - लिंग होता है।

जैसे

चक्षु च स्रोत च = चक्षु स्त्रोतं:
गीतं च वादितं च = गीतवादितं
अस्थि च चर्मं च = अस्थिचर्मं

PRINCIPAL
Yashoda Girls Arts & Commerce Colleg
Sneh Nagar, Nagpur-15
SEAL

PHamwar